सहाबा (रदी) का इश्के रसूलﷺ

मौलाना जुल्फिकार अहमद नक्शबंदी (दब)

खुतबात जुल्फकार फकीर हिन्दी/2 [१३९-१५१]

मजमून का खुलासा हे

ये PDF ग्रामर या कोई भाषा का अदब नहीं है

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

| हुस्ने रसूलﷺ के सामने चांद की हैसियत

एक सहाबी रसूलुल्लाहﷺ की ज़ियारत के लिए हाज़िर हुए. चौदहवी की रात थी. चांद अपनी पूरी आब व ताब के साथ रोशन था. कुछ ऐसा रुख बनता था की सामने ही रसूलुल्लाहﷺ तशरीफ फरमा थे और ऊपर आसमान में चांद नज़र आ रहा था. नज़र कभी आपके चेहराए अनवर पर पडती कभी चांद पर पडती फिर आपके वज्ज़हा वाले चेहरे पर पडती और फिर चांद पर पडती. बहुत देर तक वह चांद को भी देखते रहे और रसूलुल्लाहﷺ के चेहराए अनवर को भी देखते रहे. आखिरकार उन्होंने फैसला किया की ऐ चांद! तेरे हुस्न व जमाल से मेरे प्यारे पैग़म्बर का हुस्न व जमाल ज़्यादा है.

| हज़रत आएशा (रदी) की रसूलुल्लाहﷺ से मुहब्बत

हज़रत आएशा (रदी) की रसूलुल्लाहﷺ से मुहब्बत.

रसूलुल्लाहﷺ के जानिसारो को आप से बहुत ज़्यादा मुहब्बत थी. हज़रत आएशा (रदी) फरमाया करती थी ऐ ज़ुलेखा तूने युसूफ (अलै) को देखा तो उंगलियां काट डाली अगर मेरे हज़रत मुहम्मदﷺ को देखती तो दिल के टुकडे कर देती.

| हज़रत उम्मे हबीबा (रदी) का इश्के रसूल ﷺ

उम्मुल मोमिनीन सैय्यदा उम्मे हबीबा (रदी) अपने घर में मौजूद थी की आपके वालिद जो उस वक्त तक मुसलमान नहीं हुए थे किसी काम के लिए मदीना तैय्यबा आए. सोचा की चलो अपनी बेटी से मिलता हूं. उन्के घर आए. जब बैठने लगे तो चारपाई के ऊपर बिस्तर बिछा हुआ था. उम्मे हबीबा ने दौडकर बिस्तर को जल्दी लपेट दिया. कहने लगीं आप मेरे वालिद है इस्मे यकीनन कोई शक नहीं. आप जानते है की यह बिस्तर अल्लाह के प्यारे पैगम्बर का है इसलिए में किसी काफिर और मुशरिक का इस बिस्तर पर बैठना गवारा नहीं कर सकती.

| हजरत सिद्दीके अकबर (रदी) का इश्के रसूल ﷺ

सहाबा किराम रसूलुल्लाहﷺ के आशिक थे और उन्मे पहला नम्बर हज़रत अबूबक्र सिद्दीके अकबर

(रदी) का था. हाफिज़ इब्ने हजर (रह) नकल करते है की एक महफिल में रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया, मुझे तीन चिझे बहुत महबूब है, खुशबू, नेक बीवी और मेरी आंखों की ठंडक नमाज़ में है. हज़रत अबू बक्र सिद्दीक (रदी) फौरन बोल उठे ऐ अल्लाह के महबूब! मुझे भी तीन चिझे बहुत महबूब है, आपके चेहर-ए-अनवर को देखते रहना, दूसरा आप पर अपना माल खर्च करना और तीसरा यह की मेरी बेटी आपके निकाह में है. अब जरा तीनो बातो का अंदाज़ा लगाइए की इनका मर्कज़ और जड कौन बनता हैं? वह रसूलुल्लाह ﷺ की जाते अक्दस.

जब हिजरत का हुक्म हुआ तो रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अबू बक्र (रदी) के घर तशरीफ ले गए. हज़रत अबू बक्र (रदी) के दरवाजे पर दस्तक दी तो फौरन हाज़िर हुए. रसूलुल्लाह ﷺ ने हैरान होकर पूछा, ऐ अबू बक्र! क्या आप जाग रहे थे? अर्ज़ किया जी हां. कुछ अरसे से मेरा दिल महसूस कर रहा था की जल्दी ही आप को हिजरत का हुक्म होगा तो आप ज़रूर मुझे अपने साथ ले जाने का शर्फ अता फरमाएंगे. बस मैंने उस दिन से रात को सोना छोड दिया की कहीं ऐसा न हो की आप तशरीफ लाएं और मुझे जागने में देर हो जाए.

जंगे तबूक के मौके पर रसूलुल्लाहﷺ ने हुक्म फरमाया की जिहाद के लिए अपना माल पेश करो. हजरत उमर (रदी) अपने घर का आधा माल ले आते है और सोचते रहे की आज में हज़रत अबू बक्र (रदी) से नेकी में बढ जाऊंगा. लेकिन जब सिद्दीके अकबर आए तो रसूलुल्लाहﷺ ने पूछा ऐ अबूबक्र! आप अपने पीछे अपने बीवी-बच्चों के लिए क्या छोड आए? अर्ज़ किया अपनी बीवी बच्चों के लिए अल्लाह और उस्के रसूलﷺ को छोड आया हूं.

"परवाने को चिराग है बुलबुल को फूल बस सिद्दीक के लिए अल्लाह का रसूलﷺ बस"

जब रसूलुल्लाहﷺ का विसाल मुबारक हुआ तो सिद्दीके अकबर (रदी) ने अपना गम इन अल्फाज़ में जाहिर किया तर्जुमा - जब मैंने अपने नबीﷺ को वफात की हालत में देखा तो मकानात अपनी वुसअत के बावजूद मुझ पर तंग हो गए. उस वक्त आपकी वफात पर मेरा दिल लरज़ उठा और ज़िन्दगी भर मेरी कमर टूटी रहेगी. काश में अपने आका के इन्तिकाल से पहले कब्र में दफन कर दिया गया होता और मुझ पर पत्थर होते.

| हज़रत उमर (रदी) का इश्के रसूल ﷺ

रसूलुल्लाहﷺ इस दुनिया से पर्दा फरमाते है मगर

हज़रत उमर (रदी) यकीन नहीं करते की मेरे महबूब जुदाई का दाग मेरे सीने में छोडकर जा रहे है. चुनांचे तलवार उठा ली और कहने लगे की जिसकी ज़बान से निकलेगा की रसूलुल्लाह ﷺ फौत हो गए, में उस्का सर तन से जुदा कर दूंगा. इतनी मुहब्बत थी की महबूब के बारे में ऐसी बात सुनना भी गवारा नहीं करते थे.

| हज़रत उस्मान (रदी) का इश्के रसूल ﷺ

हज़रत उस्मान (रदी) का दिल इश्के रसूल ﷺ में मस्त था. एक बार आपने रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह ﷺ! अपने दोस्तो समेत मेरे घर तशरीफ लाए, जब आप जाने लगे तो हज़रत उस्मान पीछे-पीछे चल रहे थे और आपके कदम मुबारक गिनते जा रहे थे. आपने पूछा की ऐ उस्मान! मेरे कदम क्यो गिन रहे हो? अर्ज़ किया, में चाहता हूं की जितने कदम आप मेरे घर तक चलें, में उतने गुलाम आज़ाद कर दूं. सुलह हुदैबिया का वाकिआ बडा मशहूर है. रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत उस्मान को अपना सफीर बनाकर भेजा. मुशरीकीन ने हज़रत उस्माने गनी से कहा आप तो मक्का मुकर्रमा आ चुके है अगर चाहें तो तवाफ कर लें मगर हा हज़रत मुहम्मद ﷺ के दूसरे साथियो को इजाज़त नहीं देंगे.

लेकिन आपके इश्क ने इस्को गवारा न किया और फरमाया, जब तक मेरे महबूब तवाफ न करे में हर्गिज़ तवाफ न करूंगा.

| हज़रत अली (रदी) का इश्के रसूल ﷺ

रसूलुल्लाह ﷺ हिजरत पर जाने लगे तो हज़रत अली को अपने बिस्तर पर सुला दिया. हज़रत अली (रदी) बे खौफ होकर रसूलुल्लाह ﷺ के बिस्तर पर सो गए हालांकि मालूम था की दुश्मन बाहर इसी बिस्तर की ताक में खडे है मगर इश्क ने इन खतरो की बिल्कुल कोई परवाह नहीं की.

एक बार रसूलुल्लाह ﷺ को कोई ज़रूरत पेश आयी. हज़रत अली (रदी) को इस्का पता चला तो आप किसी काम की तलाश में घर से निकले ताकि कुछ लाकर आपकी खिदमत में पेश कर सके. लिहाज़ा एक यहूदी के बाग में पहुंचे और उस्के कुंए से एक डोल पानी निकालने के बदले एक खजूर बतौर मज़दूरी तय की.

हज़रत अली (रदी) ने सत्रह डोल पानी निकाले और सत्रह खजूरे (अजवा) ले ली. खजूरे लेकर खिदमत नब्वी में पहुंचे. आपके पूछने पर पूरी बात बता दी की ये खजूरे इस तरह मजदूरी करके लाया हूं. आपने फिर

पूछा की क्या तुझे इस काम के लिए अल्लाह और उस्के रसूलﷺ की मुहब्बत व इश्क ने अमादा किया या किसी और चीज़ ने? अर्ज़ किया जी हां अल्लाह और उस्के रसूलﷺ की मुहब्बत ने.

सुलह हुदैबिया के मौके पर हज़रत अली को आपने हुक्म दिया की सुलहनामा लिखे. रसूलुल्लाहﷺ खुद सुलहनामा लिखवा रहे थे. जिस वक्त फरमाते है की लिखे यह वह मुआहिदा है जो मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहﷺ ने किया तो मुशरीकीन बिगड गए और कहने लगे की अगर हम आपको रसूलﷺ मान लेते तो झगडा किस बात का था इसलिए 'मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' की बजाए 'मुहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह लिखो. मगर हज़रत अली (रदी) आपका नाम मिटाने के लिए हर्गिज़ तैयार न हुए. वह कैसे इस नाम को मिटाते जिसकी बरकत से दुनिया में हिदायत का नूर फैला था.

| हज़रत हिस्सान बिन साबित (रदी) का इश्के रसूल ﷺ

हज़रत हिस्सान बिन साबित (रदी) को शायरे रसूलﷺ होने का ऐजाज़ हासिल है. वह आलमे इश्क व मस्ती में रसूलुल्लाहﷺ को देखते तो आप की तारीफ में अशआर लिखते थे. फरमाते है ऐ रसूलﷺ! आप इतने

हसीन व जमील है की किसी आंख ने ऐसा देखा ही नहीं. ऐसा खूबसूरत बेटा किसी मां ने जना ही नहीं. आप तो ऐसे पैदा हुए है की जैसे की आपको आपकी मर्ज़ी के मुताबिक पैदा किया गया हो.

| हज़रत हुजैफा (रदी) का इश्के रसूल ﷺ

जंगे खन्दक के दौरान रसूलुल्लाह ﷺ ने ज़रूरत महसूस की की किसी तरह दुश्मनो का प्रोग्राम मालूम किया जाए. हज़रत हुज़ैफा (रदी) करीब ही मौजूद थे मगर उन्के पास कोई हथियार नहीं था और न ही सर्दी से बचने के लिए कोई चादर थी. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया, जाए और दुश्मनो के खेमे से उन्की खबर लाए. हज़रत हुजैफा (रदी) ने आका के हुक्म पर सर्दी की कोई परवाह न की और तैयार हो गए. रसूलुल्लाह ﷺ ने दुआ देकर रवाना फरमाया. हज़रत हुजैफा (रदी) फरमाते है की रसूलुल्लाह ﷺ की दुआ से मेरा खौफ और सर्दी बिल्कुल दूर हो गई. जी हां यह इश्क था जिसने दिल में रसूलुल्लाह ﷺ की ताबेदारी का ऐसा जज्बा पैदा कर दिया.

| एक सहाबिया का इश्के रसूल ﷺ

जंगे ओहद के दौरान मदीना मुनव्वरा में खबर फैल गई की रसूलुल्लाह ﷺ शहीद हो गए. इस खबर के फैलते ही मदीने में कोहराम मच गया. औरते रोती हुई

घरो से बाहर निकल आयी. एक अन्सारी औरत ने कहा जब तक इस्की खुद तसदीक न कर लू में इसे तसलीम नहीं करूंगी. लिहाजा वह एक सवारी पर बैठी और अपनी सवारी को उस पहाड की तरफ भगाया. काफी करीब आयी तो एक सहाबी आते हुए मिले. उनसे पूछती है, हज़रत मुहम्मदﷺ का क्या हाल हैं? उसने कहा मुझे रसूलुल्लाहﷺ का हाल मालूम नहीं मगर हां तेरे बेटे की लाश फलां जगह पडी है. उस औरत को उस्के जवान बेटे की शहादत की खबर मिली मगर वह टस से मस नहीं हुई. उस मां के दिल में इश्के रसूलﷺ ने इतना असर डाला हुआ था की बेटे की शहादत की खबर सुनी मगर कोई परवाह न की. सवारी आगे बढाती है. एक और सहाबी मिले पूछती है, हज़रत मुहम्मदﷺ का क्या हाल है. उन्होंने जवाब दिया मुझे मालम नहीं लेकिन हां तेरे शौहर की लाश फलां जगह पडी है. यह औरत फिर भी टस से मस नहीं हुई और आगे बढी, किसी और से पूछा, हज़रत मुहम्मदﷺ का क्या हाल हैं? जवाब मिला मुझे मालूम नहीं लेकिन हां तेरे वालिद की लाश फलां जगह पडी है. इसी तरह भाई की लाश के बारे में बताया गया की फलां जगह पडी है मगर यह औरत टस से मस नहीं हुई. आगे एक और सहाबी मिले.

पूछती है, हज़रत मुहम्मदﷺ का क्या हाल हैं? उन्होंने कहा फलां जगह मौजूद है. चुनांचे सवारी को उधर बढाती है. जब वहां पहुंची तो रसूलुल्लाहﷺ की चादर का एक कोना पकडकर कहा, मेरे ऊपर तमाम मुसीबते रसूलुल्लाहﷺ के दीदार के बाद आसान हो गई.

| महबूब ﷺ के कूचे में रात

रसूलुल्लाहﷺ रात के वक्त जब अपने हुजरे शरीफ में आराम फरमा रहे होते थे तो बाज़ सहाबा (रदी) अपने घरो से बाहर निकलते और रसूलुल्लाहﷺ के हुजरे के पास घंटो खडे रहते और सोचते की यह वह जगह है जहां हमारे महबूबﷺ सोए हुए है.
"अजब चीज़ है इश्क शाहे मदीना यही तो है इश्के हकीकी का जीना है मामूर इस इश्क से जिस्का सीना उसी का है मरना उसी का है जीना"
रसूलुल्लाहﷺ ने एक दफा इर्शाद फरमाया की जिहाद के लिए कौन-कौन तैयार हैं? हज़रत साअद बिन वकास (रदी) खडे हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! हमने अपने होश व हवास से कलिमा पढा. अल्लाह की कसम अगर आप हुक्म दें तो हम पहाडो से कूदकर अपनी जान दे दें, हम आपके कहने पर समन्दर में छलांग लगा दें.

| ज़िन्दगी की आखिरी हसरत

गजवा-ए-ओहद के मैदान में एक सहाबी जख्मी हुए. खून बहुत निकल जाने की वजह से मरने के करीब हो चुके थे. एक दूसरे सहाबी उन्के करीब आए और पूछा आपको किसी चीज़ की तमन्ना हैं? अर्ज़ किया हां, उन्होंने पूछा कौन सी? जवाब मिला की आखिरी वक्त में रसूलुल्लाहﷺ को दीदार करना चाहता हूं. उन्होंने जख्मी मुजाहिद को अपने कंधे पर उठाया और उन्को लेकर तेज़ी से उस तरफ भागे जहां रसूलुल्लाहﷺ तश्रीफ फरमा थे. आपﷺ के सामने जाकर उस्से उतारा और कहा की आपके महबूब आपके सामने है. जब नाम सुना तो मुजाहिद के दिल में बिजली की लहर दौड गई, फौरन ताकत बहाल हो गई. अपने चेहरे को रसूलुल्लाहﷺ के सामने किया दीदार करते ही उन्की हालत गैर हो गई और उन्होंने अपनी जान अल्लाह के सुपुर्द कर दी.

"निकल जाए दम तेरे कदमों के नीचे यही दिल की हसरत यही आरज़ू है तेरी मैराज की तू लौह व कलम तक पहुंचा मेरी मैराज की में तेरे कदम तक पहुंचा"

| सबसे बडी खुशखबरी

एक सहाबी (रदी) रसूलुल्लाहﷺ की खिदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ करते है की ऐ अल्लाह के नबी! में

एक बात से बहुत परेशान हूं. जिस वक्त आपﷺ की मुहब्बत हमारे दिलो में लहरे मारती है. हम हाज़िर होकर आपﷺ की ज़ियारत से अपनी आंखों को ठंडा कर लेते है. लेकिन जन्नत में तो आप बहुत आला दर्जो पर होगे. वहां पर अगर आपकी ज़ियारत न हुई तो हमे जन्नत का क्या मज़ा आएगा. इसलिए उसी वक्त हज़रत जिब्रील (अलै) आए और आकर खबर दी. आपﷺ ने उस आदमी को बुलाया और खुशखबरी सुनाई आदमी उस्के साथ होगा जिस्से उस्को मुहब्बत होगी. सहाबा किराम (रदी) फरमाते है की पूरी ज़िन्दगी में ईमान के बाद जितनी खुशी इस हदीस से हुई किसी और हदीस से नहीं हुई क्योकि यकीन हो गया की आखिरत में हमे रसूलुल्लाहﷺ का साथ नसीब हो जाएगा. सहाबा किराम (रदी) रसूलुल्लाहﷺ से इस तरह मुहब्बत करते थे.

| इश्के रसूल ﷺ में खजूर के तने का रोना

खजूर के एक तने को आपﷺ से मुहय्यत थी. आपने जब मस्जिदे नब्वी बनाई तो उस्मे मिम्बर नहीं था. मस्ज़िद के अन्दर खजूर का एक तना था. उसी के साथ टेक लगाकर आप खुत्बा दिया करते थे. अरसे के बाद तमीम दारी एक सहाबी ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूलﷺ! अगर इजाज़त दें तो एक मिम्बर

बना लिया जाए. आपने इजाजत दे दी. लिहाजा एक मिम्बर बना लिया गया. अगली दफा जब खुत्बा देने का वक्त आया तो मिम्बर पर आप खडे हो गए और खुत्बा देना शुरू कर दिया. थोडी देर के बाद खजूर के तने में से इस तरह रोने की आवाज़ आने लगी जैसे कोई बच्चा बिल-बिला कर रोता है. सब लोगों ने हैरान होकर उस तने को देखा. रसूलुल्लाहﷺ नीचे उतरे और खजूर के तने के करीब गए. उस्के ऊपर प्यार से हाथ रखा और उस्को दिलासा दिया. हदीस की किताबों में लिखा है की रसूलुल्लाहﷺ ने उस्को गले से लगाया तब वह तना इस तरह सिसकियां लेते हुए चुप हुआ जैसे कोई बच्चा अपनी मां के सीने से लगकर चुप होता है. खजूर के तने को इतनी मुहब्बत थी. ऐ काश हमे अपने प्यारे पैगम्बरﷺ के साथ खजूर के तने जैसी मुहब्बत नसीब हो जाती.

|हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद का इश्के रसूलﷺ

कुछ सहाबा किराम सुबह होते ही रसूलुल्लाहﷺ की ज़ियारत करने आ जाते थे. उन्होंने कस्मे खा ली थी, हम सुबह उठते ही आपकी जियारत करेंगे. आपकी जियारत से पहले किसी का चेहरा नहीं देखेंगे. चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद आपﷺ के विसाल के बाद नाबीना होने की दुआ करते थे.